किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग

राज्य मध्य प्रदेश

बालाघाट चिन्नौर उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित बालाघाट
जोडापट, कायदी, वारासिवनी जिला बालाघाट - 481331,
मध्यप्रदेश, भारत, सुगमित द्वारा : कृषि महाविद्यालय बालाघाट,
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

बालाघाट की धरोहर
सुगंधित बालाघाट चिन्नौर

चिन्नौर चावल

बालाघाट, मध्य प्रदेश

मध्यप्रदेश प्रथम जी.आई. टैग कृषि जिंस

भौगोलिक उपदर्शन संख्य	–	663
प्रमाण पत्र संख्या	–	382
दिनांक	–	03.10.2019
श्रेणी	–	30
मुद्रांकित दिनांक	–	14.09.2021
द्वारा	–	रजिस्ट्रार भौगोलिक उपदर्शन, चैन्नई, भारत

– विपणन संस्था –

बालाघाट चिन्नौर उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित बालाघाट

जोडापट, कायदी, वारासिवनी जिला बालाघाट – 481331, मध्यप्रदेश, भारत

चिन्नौर चावल

बालाघाट, मध्य प्रदेश

मध्यप्रदेश प्रथम जी.आई. टैग कृषि जिंस

बालाघाट की धरोहर
सुगंधित बालाघाट चिन्नौर

बालाघाट चिन्नौर उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित बालाघाट
जोडापट, कायदी, वारासिवनी जिला बालाघाट - 481331,
मध्यप्रदेश, भारत, सुगमित द्वारा : कृषि महाविद्यालय बालाघाट,
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

बालाघाट के चिन्नौर चावल की महक बिखरेगी देश विदेश में

मध्य प्रदेश की प्रथम जी. आई. टैग कृषि जिंस

चिन्नौर चावल

चिन्नौर सुगंधित चावल की न सिर्फ बालाघाट में बल्कि समूचे देश में माँग रहती है । बालाघाट जिले में चिन्नौर सुगंधित धान परम्परागत तरीके से प्राचीन समय से उगाई जा रही है । चिन्नौर का चिकनाई युक्त, नोकदार चावल अपने नाम ही के अनुरूप विशेषता रखता है, इसके दाने के शीर्ष भाग की आकृति तलवार की नोक के समान होती है, इस चांवल के किस्म का स्वाद अनोखा होता है । इस चावल से बनी खीर में मलाईदार लाजवाब स्वाद होता है, और इसमें किसी भी तरह के अन्य स्वाद को शामिल करने की आवश्यकता नही होती, पका हुआ चावल ठंडा होने के बाद भी नरम रहता है और प्रकृति में थोड़ा चिपचिपा एवं सुपाच्य होता है ।

कई वर्षों से चिन्नौर धान की खेती बालाघाट के अनेक गाँव में हो रही है । परम्परागत तरीके से चली आ रही खेती में पर्याप्त उत्पादन नही मिल पा रहा था तथा अन्य सुगंधित व असुंधित धान मिश्रित हो गये थे, कड़ी मेहनत कर उत्पादित चिन्नोर की मार्केटिंग की सही व्यवस्था न हो पाने से यहाँ के कृषक कम कीमत में अपनी उपज बेचने में मजबूर रहते थे, परंतु जी.आई.टेग का प्रमाण पत्र मिल जाने पर इसकी पहचान राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर हो जायेगी । वर्तमान समय में बाहर के बाजार में इसकी माँग बहुत अधिक होने से इसके दाम अन्य धान की तुलना में ज्यादा रहते है ।

चिन्नौर चावल को खाना एवं खिलाना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है । जी.आई.टैग मिलने से अंतराष्ट्रीय बाजार में माँग बढ़ेगी और किसानों को अच्छा से अच्छा मुल्य मिल सकेगा । जिले में लगभग 2700 किसानो द्वारा 1525 हेक्टेयर में चिन्नौर धान की पारम्परिक रूप से खेती की जा कर अनुमानित 1980 टन धान का उत्पादन लिया जा है, जिससे लगभग 1000 टन चिन्नौर चावल का उत्पादन कर विश्व स्तर पर विपणन किया जाता है ।

दक्षिण पूर्व एशिया में मीठी महक एवं छोटे दाने वाले चावल बहुत लोकप्रिय है, साथ ही धान की अन्य किस्मो के चौकर में तेल का प्रतिशत 18-19 होता है, जबकि चिन्नौर धान के चौकर में तेल का प्रतिशत 20-21 होता है, इसलिये इसके चावल की भुसी का तेल भी एक मूल्य वर्धित उत्पाद है ।

बालाघाट जिले के चिन्नौर की जी.आई.टैगिग के लिए बालाघाट चिन्नौर उत्पादक सहकारी समिति मर्यादित, कायदी, कृषि महाविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, एवं जिला प्रशासन प्रयासरत था । वर्तमान परिदृश्य में भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा 'एक जिला एक उत्पाद ' के अंतर्गत बालाघाट जिले को चिन्नौर धान हेतु चुना गया है जिसका सीधा फायदा जिले के किसानों को होगा ।

प्ररूप O-2 | FORM O-2

बौद्धिक संपदा भारत | INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

भौगोलिक उपदर्शन रजिस्ट्री
Geographical Indication Registry

वस्तुओं का भौगोलिक उपदर्शन (रजिस्ट्रीकरण तथा संरक्षण) अधिनियम, 1999
Geographical Indication of Goods (Registration and Protection) Act, 1999

धारा 16(2) के अधीन भौगोलिक उपदर्शन अथवा प्राधिकृत उपयोक्ता के रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र
Certificate of Registration of Geographical Indication or of authorised user under section 16(2)

भौगोलिक उपदर्शन संख्या
Geographical Indication No.: 663

CERTIFICATE NO. 382

दिनांक
Date : 03.10.2019

प्रमाणित किया जाता है कि भौगोलिक उपदर्शन (जिसकी अनुकृति इसके साथ उपाबद्ध है)

के नाम में ... वर्ग में ... संख्या के अधीन ... दिनांक को

के लिए रजिस्टर में रजिस्ट्रीकृत किया गया है।

Certified that the Geographical Indication (of which a representation is annexed hereto) has been registered in the register in the name of **Balaghat Chinnor Utpadak Sahkari Samiti Maryadit Balaghat** at Jodhpur, Kaydi, Waraseoni, District Balaghat - 481 331, Madhya Pradesh, India. Facilitated by: College of Agriculture Balaghat, JNKVV Jabalpur, Madhya Pradesh

in class 30 under no. 663 as of the date 03.10.2019

in respect of "BALAGHAT CHINNOR" **Falling in Class - 30** - in respect of - Rice

Sealed at my direction this 14th day of September 20 21 at Chennai.

रजिस्ट्रार, भौगोलिक उपदर्शन
Registrar of Geographical Indication.

जी.आई. टैगिंग महत्व - लाभ

- यह भारत में भौगोलिक संकेतों को कानूनी सुरक्षा प्रदान कर निर्यात को बढ़ावा एवं उत्पादकों की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देता है ।
- यह दूसरों के द्वारा पंजीकृत भौगोलिक संकेतकों के अनाधिकृत उपयोग को रोकता है ।
- यह अन्य विश्व व्यापार संगठन के सदस्य देशों में कानूनी सुरक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, इससे अंतराष्ट्रीय बाजार में उत्पाद की ब्रांण्ड वैल्यू ज्यादा हो जाती है ।
- चिन्नौर उत्पादक किसानों के हितों की रक्षा करना ।
- चिन्नौर उत्पादक कृषकों की विरासतों को संरक्षण हेतु मिलावट के खिलाफ संरक्षण ।
- ग्राहकों की क्षेत्रीय, देशव्यापी, अंतराष्ट्रीय माँग को पूरा करने के लिए इसकी उपज को बढ़ावा मिल सकेगा ।

जिले में चिन्नौर धान का आगामी समय में रकबा बढ़ाने के लिए जिला प्रशासन कृषि महाविद्यालय, कृषि विभाग कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा कृषकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है । इस परिपेक्ष में चिन्नौर उत्पादक कृषकों का FPO गठित किया गया है इससे बीज का संकर्धन - उपार्जन - ब्रांण्डिंग - वितरण - विपणन हो सकेगा ।

एक छोटी सी पहल ने दिलाई अंतराष्ट्रीय पहचान

चिन्नौर चावल की खुशबू को पहचान दिलाने एवं जी.आई.सूचक पंजीकरण हेतु बालाघाट जिले के कलेक्टर श्री दीपक आर्य जी ने कृषि महाविद्यालय बालाघाट, कृषि विज्ञान केन्द्र, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग को समन्वित जवाबदारी सौंपी फलस्वरूप बालाघाट का चिन्नौर चावल ब्रांण्डेड होने के बाद अब ऊँचे दामों पर बिकने लगेगा । इस हेतु अनेक गाँव के चिन्नौर उत्पादक समूहों को इसकी खेती से जोड़ा गया है । बालाघाट जिले के कलेक्टर श्री गिरीश कुमार पिछा जी एवं कृषि महाविद्यालय बालाघाट के अधिष्ठाता डॉक्टर एन.के.बिसेन एवं उनके वैज्ञानिकों की टीम तथा उपसंचालक कृषि द्वारा इसकी खेती को व्यवसायिक स्वरूप देकर एवं प्रसंस्कृत -पैकिंग कर बाजार में लाया जायेगा ,जिससे इसकी खेती को बढ़ावा मिलेगा व किसानों की आर्थिक स्थिति बदलेगी । किसान व्यापारियों एवं बिचौलियों को कम कीमत पर उत्पाद बेचने हेतु मजबूर नही रहेंगें । प्रशासन आने वाले समय में हर संभव सहयोग प्रदान करता रहेगा ।

आभार

इस उल्लेखनीय उपलब्धि में अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय बालाघाट एवं उनकी टीम व शामिल समस्त वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र बालाघाट में पदस्थ समस्त कृषि वैज्ञानिक, जिला किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, उद्यानकी विभाग बालाघाट का विशेष योगदान रहा है । शासन स्तर पर कृषि उत्पादन आयुक्त मध्यप्रदेश शासन श्री शैलेन्द्र सिंह जी, अपर मुख्य सचिव मध्यप्रदेश शासन श्री अजीत केशरी जी , संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग श्रीमति प्रीति मैथिल जी आदि का अभूतपूर्व सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा ।